International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 5, May 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

मुगल काल के दौरान महिलाओं की स्थिति

डॉ ललिता कुमारी

एम ए , इतिहास, पीएच - डीयदुवंशीनगर , ज़ीरोमील ,आरा ,बिहार

मुगलकाल में स्त्रियों की स्थिति काफी दयनीय थी। उनको व्यक्तियों के समान अधिकार प्राप्त नही थे। कुछ उच्च वर्ग की महिलाओं की दशा ठीक थी। लेकिन वह महिलाएं संख्या में बहुत कम थी जबकि निम्न वर्ग की महिलाए संख्या में बहुत ज्यादा थी जिसके साथ अनेक अत्याचार किये जाते थे।मुगलकालीन भारतीय समाज की उच्च वर्ग से संबंधित स्त्रियों का समाज में सम्मान था। उनकी उचित शिक्षा की और विशेष ध्यान दिया जाता था। मुगल बादशाह अपनी बेगमों का पूर्ण ध्यान रखते थे। उन्हें कुछ विशेष अधिकार भी दिए गए थे। मुगलकाल की राजनीति में , बहन , बाबर की मां , औरंगजैब की बहन आदि ने महत्वपूर्ण , शाहजहां की पत्नी , जहाँगीर की पत्नी - भूमिका निभाई। उनके पास बड़ी 2 जागीरें होती थी।[१] उन्हें विशेष अनुदान भी प्राप्त होते थे। इन स्त्रियों ने शिक्षा नृत्य , संगीत कला , चित्रकला , व्यापार , कला को प्रोत्साहन देने में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस वर्ग की स्त्रियां हृदय से उद्वार एवं दयाल होती थी। वे महलो की सजावट की और भी विशेष दिलचस्पी लेती थी। उनका जीवन स्तर बहुत अच्छा था। उनके रहन - आभूषण उच्च कोटि के थे। इसलिए वे आराम का जीवन , वस्त्र , सहन व्यतीत करती थी।[२]

जन : साधारण वर्ग में स्त्रियों की स्थिति -मुगलकालीन भारतीय समाज में जन साधारण वर्ग की स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी। समाज ने जो अधिकार पुरूषों को दिए थे स्त्रियों को उनसे वंचित रखा गया था। समाज में स्त्रियों

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

की स्थिति पुरूषों के जूतों के समान समझी जाती थी। उन्हें केवल भोग विलास की वस्तु समझा जाता था। बादशाह एवं अमीर वर्ग के लोगों ने बड़े बड़े हरम बनाए हुए थे। इन हरमों में हजारों की संख्या में अत्यन्त - सुन्दर स्त्रियां रखी जाती थीं। वे अपनी अदाओं नृत्य एवं संगीत द्वारा , पुरूषों का मनोरंजन करती थी। प्रसन्न होने पर बादशाह व अन्य अमीर उन्हें बहुमूल्य उपहार भेंट करते थे।[3] वे अपनी यौवनावस्था तक हरम में रह सकती थी। उसके पश्चात् उन्हें वहां से निकाल दिया जाता था। शेष जीवन में वे दर दर की ठोकरें खाने के लिए बाध्य हो जाती थी। उस समाज - में प्रचलित निम्नलिखित कुप्रथाओं ने उनकी स्थिति को नरक समाज बना दिया था।

कन्या वधः -हिन्दू समाज में उस समय लड़कियों के जन्म को अपशगुन माना जाता था। समाज में प्रचलित रीति रिवाज के अनुसार लड़की के विवाह पर - भारी खर्च करना पड़ता था। समाज क ा अधिकतम वर्ग निर्धन था और वह इतना भारी खर्च नहीं कर सकता था। लड़की का विवाह न होना धर्म और समाज के विरूद्ध समझा जाता था। इसके अतिरिक्त मुसलमान हिन्दुओं की जवान लड़कियों को बलपूर्वक उठाकर ले जाते थे। इसलिए बहुत से हिन्दु लड़की के जन्म लेते ही उसे मार देते थे। [४]

बालविवाह - उस समय समाज में प्रचलित रीति रिवाजों के अनुसार लड़कियों का - वर्ष 8 से 6 विवाह बहुत ही छोटी आयु भाव के भीतर कर दिया जाता था। परिणामस्वरूप उनकी शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। छोटी आयु में विवाह होने के कारण्न उन पर गृहस्थी की सभी जिम्मेदारियां आन पड़ती थी। जल्दी सन्तान पैदा होने के कारण उनके स्वास्थ्य पर बुराप्रभाव पड़ता था। [५]

सती -: प्रथा -मुगलकालीन समाज की सबसे बडी बुराई सती प्रथा की थी। इस प्रथा के अनुसार यदि किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती थी तो उसे बलपूर्वक पति की चिता के साथ जीवित जला दिया जाता था। पति की मृत्यु के समय यदि कोई स्त्री गर्भवती होती थी तो उसे बच्चे को जन्म देने के बाद पति की किसी वस्तु के साथ सती कर दिया जाता था।

समाज में विधवा जीवन नारक होने के कारण बहुत सी स्त्रियां स्वयं ही - सती हो जाना पसन्द करती थी।[६]

विधवा पुनः विवाह पर रोक :उस समय समाज में विधवा का जीवन नरक के समान था। समाज द्वारा विधवा पुनर्विवाह की आज्ञा नहीं थी। विधवा के बाल काट दिए जाते थे। उसके हार श्रृंगार पर पाबन्दी लगाई जाती थी। उसे घरेलू खुशी तथा त्यौहारों के अवसरों पर सम्मिलित होने की आज्ञा नहीं थी। विधवा का सभी निरादर करते थे। समाज में उनका जीवन अछुत के समान था।

बहु विवाह :मुसलमानों तथा उच्च वर्ग के हिन्दुओं में बहु विवाह की प्रथा - प्रचलित थी। प्रत्येक मुसलमान चार विवाह करवा सकता था। उन में तलाक प्रथा बहुत प्रचलित थी। वे पहली पत्नियों को तलाक देते जाते थे तथा एक विवाह और करवाते रहते थे। अधिक पत्नियों के कारण उनमें आपसी झगड़े चलते रहते थे। इनके अतिरिक्त वे बड़ी संख्या में रखोलें भी राखते थे। संक्षेप में इस प्रथा ने स्त्रियों की दश को और दयनीय बना दिया था।[७]

पर्दा प्रथा :मुगल काल में पर्दा प्रथा का प्रचलन बहुत बढ़ गया था। मुस्लिम स्त्रियों में पर्दा प्रथा पर बहुत बल दिया जाता था। घर की चारदीवारी में भी वे पर्दे में रहती थीं। वे घर में आने वाले मेहमानों एवं रिश्तेदारों के समक्ष बिना पर्दे के नहीं आ सकती थी। घर से बाहर जाते समय भी उन्हें सदैव पर्दे में रहना पड़ता था। यदि कोई स्त्री बिना पर्दा बाजार में जाती तो उसे बलपूर्वक वेश्याओं के सुपुर्द कर दिया जाता था। हिन्दू स्त्रियों ने भी इस प्रथा को मुसलमानों से अपना लिया था। इसके पीछे उनका उद्देश्य मुसलमानों से अपने इज्जत की रक्षा करना था। निम्न वर्ग की स्त्रियों में यह प्रथा प्रचलित नहीं थी क्योंकि उन्हें अपने जीवन के निर्वाह के लिए खेतों कारखानों व ,लोगों के घरों में कार्य के लिए जाना पड़ता था।

निष्कर्ष -:

मुगलकालीन समाज में स्त्रियों की दशा तथा जीवन बहुत दयनीय था। समाज में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त नही थे। उनको सभी स्वतंत्रता तथा खुशीयों और तो और त्योहार से भी दुर रखा जाता था। राजा महाराजाओं - की परिवार तथा रिश्तेदारी के घरों में महिलाएं की वो स्थिति नहीं थी जो साधारण परिवारों के घरों की स्त्रियों की थी।हिंदू महिलाओं ने अपने परिवार में सम्मान का आनंद लिया शिक्षित हुए और उनमें से कई ने विद्वानों की ,धार्मिक समारोहों में भाग लिया , समाज में उनकी स्थिति खराब हो गई थी और वे कई , सामान्य तौर पर , ख्याति अर्जित की।फिर भी समाज में एकरसता , सामाजिक बुराइयों से पीड़ित थे।आम तौर परका प्रचलन था लेकिन अमीर लोगों , के बीच एक आदमी कई पत्नियां रख सकता था। विधवा फिर से शादी नहीं कर सकती थी। वे या तो पुरुष के रूप में अपना जीवन व्यतीत करने लगीं।- अपने पति की चिता पर सती हो गईं या महिला मह- मुसलमानों को हमेशा या तो छेड़छाड़ करने के लिए या हिंदूिलाओं को पकड़ने के लिए तैयार किया जाता थाविवाह और पुरदाह व्यवस्था होती थी।-जिसके परिणामस्वरूप बाल ,[८]

इसने समाज में उनकी शिक्षा और आंदोलनों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला। इसलिए उन्हें केवल घरों में , शिक्षा प्रदान की जा सकती थी जो केवल अमीरों द्वारा वहन की जा सकती थी। बेटी के जन्म को एक बुरा शगुन माना जाता था और इसके परिणामस्वरूप महिला निचली , शिशु हत्या का चलन था।हालाँकि- जातियाँ इनमें से कई सामाजिक बुराइयों से मुक्त रहीं। उनमें कोई पुरदाह व्यवस्था नहीं थी और उनकी औरतें तलाक और पुनर्विवाह के लिए स्वतंत्र थीं। यहा ं तक कि उनके बीच विधवा विवाह की भी- अनुमति थी।

देवदासी प्रणाली एक और सामाजिक बुराई थी जो हिंदुओं में प्रचलित थी। सुंदर अविवाहित लड़कियों को भगवान पाप मंदिरों की छवियों की पेशकश की गई थी जहां उन्होंने अपना जीवन देवताओं के , नौकरानियों के रूप में गुजारा। यह नकेवल उनके जीवन के लिए गंभीर अन्याय था बल्कि मंदिरों में , भ्रष्टाचार भी था।

कुछ अन्य परिवर्तन थे जो मुसलमानों के संपर्क के कारण हिंदुओं ने स्वीकार किए थे। हिंदुओं ने धर्मान्तरित हिन्दूसामाजिक आदतों औ ,पान-खान , धर्म को स्वीकार करना शुरू कर दिया। उनके कपड़ों-र कुछ रीति रिवाजों में भी बदलाव हुए।मुस्लिम महिलाओं को भी समाज में सम्मानजनक स्थिति प्राप्त नहीं- थी। बहुविवाह मुसलमानों में व्यापक रूप से प्रचलित था। प्रत्येक मुसलमान को कम से कम चार पत्नियाँ महिलाओं के-प्रणाली को मुस्लिम -या दास रखने का अधिकार था। पुरोधाबीच सख्ती से देखा गया था।

वे इस सामाजिक हिंदू महिलाओं की तुलना में उन्हें कुछ , प्रथा के कारण शिक्षा से रहित थे। हालांकि- पिता- पुनर्विवाह को तलाक दे सकते थे और अपने माता , मामलों में बेहतर रखा गया था। वे अपने पति की संपत्ति में अपने हिस्से का दावा कर सकते थे। मुस्लिम महिलाओं में सती प्रथा नहीं थी।

सन्दर्भ

१ निवेदिता ,नारीवादीआंदोलन, पृष्ठ४५

२ सुशीलाअग्रवाल ,भारतीयमहिला, पृष्ठ ,१२२

३ वही

४ प्रभात ख़बर, १०१०२०१४

५ सविताकुमारी ,मुग़लकालीनमहिलाएंकीस्थिति, पृष्ठ ,१५६

६ वही

७ एसबनो ,मुस्लिममहिलाएं, पृष्ठ ,२२०

८ वही